विचार प्रवल

एक विचार मे कितना वल होता है इसकी आप बीती हम आपको सुनाते है । अखबार मे खबर पढी रेडियो टी वी पर सुना देखा कि 26 जनवरी 2001 को गुजरात मे भूकम्प आया जिसमे लाखो लोगो के घर उजड़ गये गाँव के गाँव ध्वस्त हो गये । हमारा भारत से अमरीका बापिस आने का समय नजदीक आ रहा था । मुम्बई सूरत मे लोगो से मिलना था पर गुजरात हम हो आये थे पर मन मे एक **विचार** छटपटा रहा था कि इतनी बड़ी मुसीबत गुजरात के लोगो पर पड़ी है, हम दोबारा गुजरात जाय बिना वापिस अमरीका तो नही जा सकते है । अखिर लोग जब वहाँ पूछगे तो क्या जबाब देगें, उन्हे क्या मालूम कि दिल्ली कहाँ है वहाँ से गुजरात कितनी दूर है । उधर हमारे गुजरात के सम्बधित व्यक्ति हमे गुजरात आने से रोक रहे थे उस समय बहाँ मदद की धुआंधार वर्षा के कारण वहाँ आपाधापी मची हुई थी । मेरठ से फोन करके मानव कल्यान ट्रस्ट के संचालक श्री लल्लू भाई देसाई से सम्पर्क कर पिलखुआ से 104 टेन्टो को बनबा कर जल्दी से दस दिनो के अन्दर टैन्टो को जेठासरी, जड़सा एवं गमराउ गांवो मे पहुचा तो दिया । फिर भी मन मे एक विचार आया क्यो न एक घर ही बनबा कर एक परिवार को बसा दिया जाय । फरबरी मे अपने सोनगढ़ के अपने पढ़ाब को कम करके हम भुज, अंजार, रतनाल, चुबडगा, मरियंगडा गाँवो का संपूर्ण विध्वंस अपनी आखों से देखा । इस यात्रा के दौरान हम गांधीधाम, नरायन सरोवर , अहमदाबाद, गांधीनगर, बडौदा भी गये । कुछ लोग जो वेघर व परिवार को खो चुके थे उनसे बाते भी की, उनकी अपबीती सुनी, समझी तो विचार आगे बढा कि इतने लोगो मे से एक परिवार को कैसे चुना जाय, एक घर कैसे बनेगा और बह परिवार कैसे सुख से रह पायेगा जबकि आस पास खंडहर और मलवा तक हटने का इन्तजाम नही है । तब बिचार आगे बढा कि काश हममे एक पूरा गांव बनाने की समर्थ होती । इस चाहत के विचार को बीज की तरह मन मे संजोकर हम मार्च के शुरू मे अमरीका पहुंच गये । वहाँ पहुंचकर पता चला कि अमरीका के हर बड़े शहर मे भारतीय व स्थानिये लोगो ने मिलकर लाखो डालर विभिन्न संस्थाओ ने भूकम्प पीढ़ितो की मदद के लिये इक्ट्ठा कर लिया है ।

हमने अपने विचार को सपना बनाना शुरु कर दिया और मूर्त रुप देने के लिये सोचा कि 100 घरो का एक गांव बनबाने के लिये मानव कल्यान ट्रस्ट की तरफ से एक 100,000 डालर का प्ररुप बनाकर एक संस्था को भेज दिया । इनके पास अनन फानन मे 30 प्ररुप आ चुके थे । लेकिन चयनकर्ताओ ने हमारे से अच्छे प्ररुप पसन्द करे । हमे खुशी हुई कि और लोग भी समाज का काम करने के लिये आगे आ रहे है और हमने उन्हे उत्साहित किया ताकि वह और अच्छा काम कर सके वहाँ की स्थानिय स्थिति से भी अबगत कराया सबको आखौ देखा हाल भी सुनाया जो विनाश का हमने देखा था । इसी बीच हमारे पास एक मैगजीन हमारे साथ लगी जिसमे MIT के एक प्रोफेसर वैम्पलर जो आर्कीटेक्ट है, के बारे मे लिखा था जो टर्की मे भूकम्प पीढितो के लिये UNO की मदद से एक नये गांव की संरचना मे लगे हुये है । जिसमे तकनीकी जानकारी के अलावा गांव वसियो को स्वावलम्बी और अपने ग्रामीण परिवेश को उपयोगी सम्यक जानकारी से श्हरो को पलायन बाली प्रवृति को रोकने मे प्रोफैसर वैम्पलर व उनके स्टूडेन्टस का बड़ा हाथ रहा । उस सूचना मे हमारे विचारो को अपने देश के लिये देखे गये सपनो को साकार होगे को विश्वास दिलाने, वाली भूमिका अदा की ।

मेरा छोटा बेटा गौरव जो MIT मे पढा है मैने सोचा कि इस प्रोफेसर से मेरी जान पहिचान करवा देगा जैसे हम सभी सोचते है कि बिना जान पहिचान के कोई काम नही हो सकता है । पर इसने मुझे तरीका बता दिया तो मैने ई मेल से प्रोफेसर वैम्पलर से सम्पर्क किया । वे वड़े ही सरल, सज्जन, व उत्साह बढाने वाले व्यक्ति निकले और अगले कई महिनो मे हमे बोस्टन जाने का बहुत मौका मिला क्योकि हमारी पोती का जन्म भी उसी साल हुआ है इस कारण । उनसे बहुत कुछ सीखने को मिला । पर दुर्भाग्यवश सित्मबर 11 के बाद उत्पन्न हुई अनर्तराष्ट्रीय परिस्थितियो के चलते प्रोफेसर को अपने स्टूडेन्टस के साथ गुजरात जाकर हमारा मार्ग दर्शन संभव न हो सका क्योकि उनको वह कार्यक्रम रदद् कर देना पड़ा । हम उनके विचारो से बहुत अधिक प्रभावित हुये और हमारा यह विश्वास और मजबूत हो गया कि भारत के गाँवो को सुधारने के लिये यही तरीका अपनाना चाहिये कि योजना और कार्यप्रणाली गांव बालो के सहयोग से बने तभी वह सफल होगी । हमको उनको आवश्यक सूचनायें, सहयोग, नये तरीके, व्यवहारिक ज्ञान एवं

प्रशिक्षण देना होगा। आर्थिक रुप से भी उनकी मदद भी करनी पड़ेगी और साथ यह भी सिखाना होगा कि वह स्वालम्बी कैसे वन सकते है बचत करके या फिज़ूल खर्ची कम करके।

इस बीच चार पाचं महीनो मे राहत का काम जब कम हूआ तो लल्लू भाई मे हमे सुरसरधाम का प्ररुप भेजा जो सौ घरो का एक नया गांव बनाने की योजना थी इस गांव जो मुख्य रास्तो से दूर था अबतक वहाँ कोई मदद नही पहूचँ पाई थी । ऐसे 120 परिवार जो एक जमीन ले चुके थे 3 km दूर थी, पुराने घरो के स्थान पर नये घर बनाना चाहते थे, पर कोई सहायता नही मिली थी उन्हे अब तक । सभी कम्यूनिटी के लोग थे पर ज्यादातर लोग राबडी जाति के थे । करीब करीब उसी समय हमे IDRF इन्डिया डवलपमैन्ट रिलीफ फन्ड से उनके पास मौज़ूद फन्डस की जानकारी हुइ । हमने एक ार्म मगंवाकर मानब कल्यान के पास भेज दिया उन्होने भरकर बापिस सीधा भेज दिया । IDRF ने कुछ व्यक्तिहत मीटिगों के बाद एक शर्त पर मंज़ूर किया कि हम यदि हम सीधे रुप से इस प्रोजेक्ट से जुडे तो उन्हे सहायता करने मे कोई आपत्ति नही होगी क्योकि वह मानव कल्यान ट्रस्ट को नही जानते है हमे इसमे कोई आपत्ति नही हूई हम तो चाहते थे कि कुछ तो काम हमारे हाथ से हो भूकम्प पीढ़ितो के लिये । हम सहर्ष मान गये क्योकि हमे अपने सपनो को का साकार करने का मौका जो मिल रहा था कि नये गांव बालो को स्वालम्वी बनाने का भी उम्मीद थी। जहाँ हमे 33 लाख रुपयो की जरुरत थी पर मिले हमें 23 लाख का ही आसवासन मिला IDRF से । इधर घर भी 100 की जगह 120 हो गये थे । सोचा काम शुरु किया जाय कही न कही से इन्तजाम हो ही जाएगा। अमरीका से जब हम फिर भारत बापिस जा रहे थे तो एक मित्र ने बताया था कि शायद दो लाख रुपये हमे एक प्रोजेक्ट के बचे है मिल जायेगे उम्मीद पूरी थी ।

लल्लू भाई ने हमे तेजा भाई से मिलवाया जो उनकी संस्था के साथ भुज क्षेत्र मे काम करते है । इनके साथ बातचीत की व उनके निस्वार्थ बेबाक व्यक्त्वि को नज़दीक से देखने परखने का मौका मिला वह अपने मे एक संस्मरण हो गया है । बही लकडिया सेन्टर मे कार्यरत संस्था डिसापिल सेन्टर(दिल्ली) के कार्य कर्ताओ से मिलना हुआ जो 100 घरो के लिये कंक्रीट, कोपिन, कालम, और सिमेन्ट की ईटे देना चाहते थे । हमने उनका सहयोग भी स्वीकार कर लिया । गांव बालो के साथ मीटिगं की, फाउन्डेशन स्टोन रखने की रस्म के साथ ग्रम कोष की स्थापना कर दी हर परिवार से 11 रुपये लेकर अपनी ओर से भी हमने रुपये दे दिये कोष मे । अब हम यह अपना फर्ज समझते है कि सरकारी संस्थाओ से उन्हे मदद दिलवाकर प्रशिक्षण दे दे ताकि वह स्वालम्बी बन सके और अपनी आर्थिक बढोतरी खुद कर पाएं । गांव बाले न हम पर और हमन गाँव बालो पर कि उनमे स्वालम्बी बनने की इच्छा है । समान बिचारो बालो को एक दूसरे से वल मिलता है । तभी तो तुलसी दास जी ने लिखा है ।

जहाँ सुमति तंह सम्मपति नाना , जहां कुमति वहां विपत्ति विधाना ।

हम उनकी प्रगति मे उनके साथी है । और अंत मे हर छोटे वड़े कार्य के मूल मे एक विचार का होना जरुरी है या यह कहा जा सकता है कि एक विचार ही हर कार्य की जननी है। विचार हर समय मे होते है पर कुछ लोगो की ग्रहण शक्ति पर निर्भर करता है कि व्यक्ति विशेष क्या करता है ग्रहण करने के बाद ।

रश्मि उमेश रोहतगी

लकडिया रापर भुज गुजरात 28 मार्च 2002 भारत यात्रा के दौरान

Umesh Rashmi Rohatgi 24161 Nilan Drive Novi MI 48375 USA phone ☹248) 471-5786

Web Page : www.rurohatgi.com Email: rurohatgi @yahoo.com